अंतरिक्ष से गिरता मलबा

पिछले नवम्बर में हिन्द महासागर में अंतरिक्ष से कुछ कबाड़ा गिरा मगर अब तक यह पता नहीं चल सका है कि यह किस चीज़ का कबाड़ा है। यह पहली बार है कि अंतरिक्ष से कोई कृत्रिम वस्तु तयशुदा समय और स्थान पर नहीं गिरी है। अंतरिक्ष वैज्ञानिक यह पता लगाने में जुटे हैं कि वह चीज़ है क्या।

इस कबाड़े को नाम दिया गया है WT1190F। इसे हिन्द महासागर में गिरते हुए किसी ने नहीं देखा, हालांकि दूरबीनें 2009 से ही इस वस्तु को बीच-बीच में देख पा रही थीं। सन 2015 तक किसी को अंदेशा नहीं था कि यह धरती पर गिरने वाली है। मगर जब स्पष्ट हो गया कि यह वस्तु गिरेगी तो ऐसी घटना के अवलोकन के इन्तज़ाम किए गए। एक तो ज़मीनी केंद्रों से इसके गिरने का अवलोकन किया गया, वहीं दूसरी ओर एक चार्टर्ड विमान से इसका पीछा भी किया गया। मगर दुर्भाग्यवश इसे धरती से 33 किलोमीटर निकट पहुंचने के बाद नहीं देखा जा सका।

अब सबसे पहला काम तो यह किया गया है कि 2009 के बाद से जब-जब इसे देखा गया था, उसके आधार पर इसका मार्ग पता करने के प्रयास हुए हैं। इस मार्ग को देखकर अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को लगता है कि यह किसी ऐसे प्रोजेक्ट का मलबा होना चाहिए जिसे चांद की ओर भेजा गया था।

दूसरा अनुमान यह लगाया गया है कि यह वस्तु अंतरिक्ष में दस साल से ज़्यादा समय से नहीं रही होगी क्योंकि अन्यथा इस रास्ते चलने वाली वस्तु या तो पहले ही पृथ्वी पर गिर चुकी होती या सूरज की परिक्रमा करने लगती। इसके आधार पर कई सारे चंद्रमा प्रोजेक्ट्स को सूची में से हटा दिया गया है।

वैज्ञानिक नासा द्वारा छोड़े गए ल्यूनर प्रॉस्पेक्टर में लगाए गए एक रॉकेट को सबसे संभावित उम्मीदवार मान रहे हैं। यह हिस्सा प्रॉस्पेक्टर को पृथ्वी की कक्षा से बाहर धकेलने के बाद उससे अलग हो गया था। इसके रास्ते का अनुमान WT1190F से सबसे ज़्यादा मेल खाता है।

इसके अलावा गिरते हुए WT1190F के एक टुकड़े का वर्णक्रम भी हवाई जहाज़ पर लगे उपकरणों ने प्राप्त किया था। इस वर्णक्रम के विश्लेषण से उसमें टाइटेनियम ऑक्साइड और हाइड्रोजन की उपस्थिति के संकेत मिले हैं। इन अवलोकनों को 5 जनवरी को आयोजित अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ एयरोनॉटिक्स एंड एस्ट्रोनॉटिक्स की बैठक में सेटी इंस्टीट्यूट के पीटर जेनिस्केन ने प्रस्तुत किया। ल्यूनर प्रॉस्पेक्टर का बाहरी आवरण टाइटेनियम का ही बना था।

अब कोशिश यह हो रही है कि WT1190F को 2009 से पहले देखे जाने के रिकॉर्ड को खंगाला जाए। उसके आधार पर यह पता चल सकेगा कि क्या ल्यूनर प्रॉस्पेक्टर और उसका रास्ता मेल खाते हैं।

WT1190F की पहचान चाहे जो भी साबित हो मगर सब मान रहे हैं कि गनीमत रही कि यह कबाड़ा हिन्द महासागर में गिरा वरना कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। ***(स्रोत फीचर्स)***